श्री अजितनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री अजितनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥

यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥ 8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ 9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥

तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री अजितनाथ विधान

जय बोलिये

कर्मशत्रु के विजेता,
हम सबके धर्मनेता,
मोक्षमार्ग प्रणेता,
मुक्ति के विनेता,
शुद्धात्मा के सृजेता,
गुणों के विक्रेता,
आत्मविजयी, महामृत्युंजयी
परमपूज्य
श्री अजितनाथ भगवान् की जय ॥

भजन

(लय : आत्मशक्ति से ओतप्रोत....)

अजितप्रभु को नमन हमारा, भक्ति सहित सादर हो।
जिन चरणों में सर हो।

कर्म शत्रु को जीत आपने, प्रीत अमर की साँचीऽऽऽ
धर्मरीत को अपनाई तो, दुनियाँ खुश हो नाँची।
हम भी भव से भीत बनें अब, ऐसा साहस भर दो॥
दृष्टि दया की कर दो॥ 1 ॥

हम भक्तों पर नजर आपकी, पड़ जाये हितकारीऽऽऽ
तो दुनियाँ की नजर लगे ना, बदले नजर हमारी।
नजर-नजर को नजर-नजर दो,ऐसा प्रभु कुछ कर दो॥
जीवन उज्ज्वल कर दो॥ 2॥

भक्ति गीत बिन जीवन अपना, बिना प्राण की कायाऽऽऽ
मृत जैसी इस काया में हम, खोजें जीवन-माया।
जीवन हो जयवंत हमारा, प्राण प्रतिष्ठा कर दो॥
'सुव्रत' को प्रभु वर दो॥ 3 ॥

श्री अजितनाथ विधान

स्थापना

(दोहा)

अजितनाथ भगवान् को, मन मंदिर में धार।
करें भक्ति आराधना, सुखी बने संसार॥

(हरिगीतिका)

दूजे जिनेश्वर प्रभु अजितजी, नाथ! भक्तों के रहे।
काया सुनहरी सी चमकती, स्वर्ग के त्यागी रहे॥
हो मोह शत्रु के विजेता, धर्म के नेता रहे।
हम भी बनें रिपु कर्मजेता, मोक्ष पर ललचा रहे॥

(दोहा)

अजितनाथ तीर्थेश का, हाथी चिह्न महान्।
जिनकी अर्चा हम करें, हाथ जोड़ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

मिथ्यात्व के विष नीर से तो हम सदा मरते रहे।
फिर जन्म मृत्यु की व्यथायें रोज हम सहते रहे॥
सम्यक्त्व श्रद्धा जल मिले भव-रोग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

क्या मूल्य चंदन का रहा जब, चरण चंदन पा गये।
फिर भी करें हम अर्चना तो, शरण प्रभु की आ गये॥
हमको मिले निर्मल चिदातम, ताप का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

पर्याय पुद्गल की विनश्वर, में फँसा अज्ञान है।
जिन भक्ति से शिव मुक्ति हो, इस भक्त का अरमान है॥
उज्ज्वल धवल अक्षत चढ़ा, भव चक्र का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

कामांध से व्याकुल हमें तो गालियाँ पल-पल मिलीं।
ना भक्ति की कलियाँ खिली ना मुक्ति की गलियाँ मिलीं॥
चारित्र से चेतन सजे अब, काम का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

तन की तनिक सी भूख से हम, रात दिन व्याकुल हुए।
कब भूख मन की दूर हो यह सोच हम आकुल हुए॥
संयम मिले, नैवेद्य अर्पण से क्षुधा परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

अज्ञान मिथ्या मोह तम से, रो रही है आतमा।
साँची क्रिया प्रभु अर्चना खोयी कहाँ परमातमा॥
जिन दीप से निज दीप उजले, मोह का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

हम आज तक तो जल न पाये, किन्तु फिर भी जल रहे।
रत्नत्रयों के बिन तपस्या ज्ञान तप निष्फल रहे॥
अब धूप खे जिन रूप पायें, कर्म का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

क्या राग के क्या द्वेष के क्या मोह के फल मिल रहे।

भूले तुम्हें, भूले हमें हम, हाय! किस काबिल रहे॥
जिन-भक्ति फल वैराग्य पायें, राग का परिहार हो।
हे नाथ! प्रभु अजितेश वंदन, भक्त का स्वीकार हो॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पञ्चकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

कृष्णा ज्येष्ठ अमास को, छोड़ा विजय विमान।
विजया माँ के गर्भ में, वसे अजित भगवान्॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्ला दशमी माघ को, जन्मे अजितकुमार।
जितशत्रु के आँगने, जय-जय हो त्यौहार॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्ला नवमी माघ को, तजे अजित दुख धाम।
संत बने अंतरमुखी, सुर-नर करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लनवम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस शुक्ला पौष को, पाकर केवलज्ञान।
अजित बने भगवन अजित, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ल-एकादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्ल पंचमी चैत्र को, मधुवन से कर ध्यान।
गये अजितप्रभु मोक्ष को, जिन को नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ल पञ्चम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

अजितनाथ प्रभु की कथा, भक्त सुनायें आज।
कर्मशत्रु को जीतने, दो चरणों का राज॥

(ज्ञानोदय)

वत्स देश का नगर सुसीमा, वहाँ विमल वाहन राजा।
सुन्दर चतुर गुणी उत्साही, करे धर्ममय हित काजा॥
सदा धर्म से पुण्य, पुण्य से, अर्थ भोग हो प्राप्त यहाँ।
इसीलिए वह जैनधर्म का, धर्मात्मा हो गया अहा॥ 1॥

किसी समय वह हो वैरागी रत्नत्रय धर सन्त बना।
जिनदीक्षा ले आत्म ज्ञानमय निर्मोही निर्ग्रन्थ बना॥
तीव्र तपस्या करके उसने, ग्यारह अंगों को जाना।
भावनाएँ फिर सोलह भाकर, तीर्थंकर का पद बाँधा॥ 2॥

और अन्त में णमोकार को, जप-जप समाधिमरण किया।
विजय अनुत्तर स्वर्ग पहुँचकर, स्वर्ग सुखों को वरण किया॥
पन्द्रह माहों तक देवों ने, दिव्य रत्न सुर बरसाये।
फिर सोलह सपनों को देकर, सुर से भू पर प्रभु आये॥ 3॥

जन्म समय सौधर्म इन्द्र ने, मेरु पर अभिषेक किया।
अजितनाथ शुभ नामकरण कर, न्यारा ताण्डव नृत्य किया॥
जन्म हुआ तो बंधु वर्ग भी, रिपुओं पर जय विजय किये।
सभी शत्रुओं पर जय पाकर, अजितनाथ साम्राज्य किये॥ 4॥

आयु बहत्तर लाख पूर्व की, देह सुनहरी सी पायी।
साढ़े चार सौ धनुष ऊँचाई, सुख सामग्री सब पायी॥
कभी महल की छत पर बैठे, उल्का पात तभी देखा।
भव-भोगों से विरक्त हो तब, फिर वैराग्य पाठ सीखा॥ 5॥

लौकान्तिक देवों ने आकर, तब वैराग्य सराहा था।
जिससे प्रभु ने जूठन जैसा, राज्य पाठ सब त्यागा था॥

किया राज्य अभिषेक पुत्र का, उसे राज्य अपना सौंपे।
बैठ 'सुप्रभा' शिविका पर फिर, स्वयं सहेतुक वन पहुँचे॥ 6॥
नमः नमः सिद्धेभ्यः कह कर, सप्तपर्ण तरु तल में जा।
इक हजार राजाओं के सह, नियम लिया फिर बेला का॥
जिनदीक्षा ली साँयकाल में, ज्ञान मनःपर्यय पाया।
ब्रह्मा नृप ने प्रथम दान दे, पंचाश्चर्य पुण्य पाया॥ 7॥
मौन रहे छद्मस्थ काल में, बारह बरस तपस्या की।
केवलज्ञानी धर्मात्मा बन, हर ली कर्म समस्या भी॥
समवसरण में दिव्य देशना, देकर धर्म घोष की जय।
अंतर बाहर का वैभव पा, चमत्कार पाया अतिशय॥ 8॥
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, अजित नाम सार्थक करके।
एक माह तक योग निरोध कर, सारे कर्म नष्ट करके॥
प्रातः प्रतिमायोग धार कर, मोक्ष पधारे स्वामी जी।
अजितनाथ सम हम बन जायें, अतः करें प्रणमामि जी॥ 9॥
अजितनाथप्रभु के शासन में, सगर चक्रवर्ती जन्मा।
जिसके साठ हजार पुत्र थे, सुन्दर गुणी महा धन्या॥
शुद्ध वंश के पुत्र पिता के, आज्ञाकारी भी होते।
अतः पिता की आज्ञा से वे, धर्म कार्य से अघ धोते॥ 10॥
भरत चक्रवर्ती से निर्मित, श्री कैलाश शिखर पर जो।
रत्नों के चौबीस जिनालय, अरिहंतों के मंदिर वो॥
चारों ओर उसी पर्वत के, परिखा कर गंगा भर दी।
दण्डरत्न से कार्य पूर्ण कर, जिनशासन की जय कर दी॥ 11॥
पुत्रों के मरने की झूठी, खबर सगर ने जब पायी।
भागीरथ को राज्य दिया तब, जिनदीक्षा फिर अपनायी॥
उधर पिता के मुनि बनने की, खबर मिली जब पुत्रों को।
तो पुत्रों ने जिनदीक्षा ले, धारा शुभ चारित्रों को॥ 12॥

पिता पुत्र सम्मेदशिखर से, मोक्ष पधारे तप करके।
और यहाँ भागीरथ राजा, बने संत सब तज करके॥
ध्यानी मुनि भागीरथ जी के, चरण पखारे इन्द्र महान्।
वह जलधारा गंगा पहुँची, तब से गंगा तीर्थ समान॥ 13॥
भागीरथ गंगा के तट से, तप करके निर्वाण गये।
सुनकर कथा धर्म की हम सब, जिन-गंगा पहचान गये॥
सुनो! एक सौ सत्तर पद जो, तीर्थंकर के बतलाये।
अजितनाथ के शासन में वो, भरे जिनागम गुण गाये॥ 14॥
द्वितीय होकर अद्वितीय जो, अजितनाथ भगवान् हुए।
जिनका नाम अकेला सुनकर भक्तों के कल्याण हुए॥
फिर भी गुरु ग्रह बाधा हरने, अज्ञानी प्राणी डोलें।
ग्रह क्या? मृत्युंजय बनते जो, अजितनाथ की जय बोलें॥ 15॥
शक्ति भक्ति क्या?भुक्ति मुक्ति क्या? हमको इसका ज्ञान नहीं।
राग द्वेष क्या, मोह पाप क्या, इसकी भी पहचान नहीं॥
किन्तु आप सम चिदानंद को, 'सुव्रत' पाने ललचाये।
अतः अर्चना की गंगा में, अवगाहन करने आये॥ 16॥

(दोहा)

अजितनाथ को पूजकर, करें प्रार्थना आज।
कर्म शत्रु पर जय मिले, मिले मोक्ष साम्राज्य॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(अडिल्ल)

बड़े-बड़े पर-ज्ञानी जो भी आ गये।
अजितनाथ से मात तुरत वो खा गये॥
हमको आक्षेपणी कथा का सार दो,
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 1॥

ॐ ह्रीं आरोप-प्रत्यारोपविनाशक-आक्षेपणीकथा ज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अजितनाथ ने परमत खंडित कर दिया।
जिनमत मंडित उच्चासन पर कर दिया॥
हमको विक्षेपणी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 2॥

ॐ ह्रीं न्यायप्रदायकविक्षेपणीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो संसार दुखों के अद्भुत काव्य हैं।
जिनको सुन भयभीत हुये हम भव्य हैं॥
हमको संवेदनी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 3॥

ॐ ह्रीं दीनताभावनाशकसंवेदनीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

राग आग से बचने देती ज्ञान जो।
जिन दीक्षा देकर करती निर्वाण जो॥
हमको निर्वेदनी कथा का सार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 4॥

ॐ ह्रीं इष्टसिद्धिपूरकनिर्वेदनीकथाज्ञानदाता श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नारी-तन से रागादिक के जो वचन।
करने वाली कथा नशाती जिन धरम।
तुम सम स्त्री-कथा त्यागने, द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 5॥

ॐ ह्रीं स्त्री अपवादस्त्रीकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अर्थ उपार्जन रक्षण के उपदेश जो।
करने वाली कथा हरे जिन-भेष को॥
तुम सम अर्थ कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 6॥

ॐ ह्रीं अर्थविकार अर्थकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोजन पान मसालों वाले ज्ञान जो।
करने वाली कथा हरे चितज्ञान को॥
तुम सम भक्त-कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 7॥

ॐ ह्रीं भक्तदोष भक्तकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

राजाओं के वैभव का अनुराग जो।
करने वाली कथा हरे वैराग्य को॥
तुम सम राजकथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 8॥

ॐ ह्रीं राजरोग राजकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कृत कारित अनुमोदन चोरी चोर की।
करने वाली कथा हमें झक-झोरती॥
तुम सम चोर कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 9॥

ॐ ह्रीं चोरभय चोरकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे वैर बढ़ें जन्में नशते नहीं।
ऐसे वचन आपको सच! जचते नहीं॥
तुम सम वैर कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 10॥

ॐ ह्रीं वैर विद्वेष वैरकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे पाखण्डी जन का सत्कार हो।
आतम के स्वरूप का हा-हाकार हो॥

पर-पाखण्ड कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 11॥

ॐ ह्रीं पर प्रभाव परपाखण्ड विनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देश नगर या ग्राम शहर जो धाम हैं।
उनके रागी वचन कष्ट संग्राम हैं॥
तुम सम देश कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 12॥

ॐ ह्रीं स्वार्थभाव देशकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिससे भाषा बोली या विज्ञान से।
राग-द्वेष कर हटते आतम ज्ञान से॥
तुम सम भाष-कथा तजने को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 13॥

ॐ ह्रीं मन्दबुद्धि भाषकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनमें तप स्वाध्याय न हो वैराग्य भी।
वो अकथा जो जला रही चित बाग भी॥
तुम सम अकथा तजने हमको द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 14॥

ॐ ह्रीं तत्त्वविकार अकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

राग-भोग जो बढ़ा रही वचनावली।
दान धर्म जो हरती आतम की कली॥
तुम सम विकथा तजने हमको द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 15॥

ॐ ह्रीं दानधर्मविकार विकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्ण मर्म के भेदी भीषण जो वचन,
करें हृदय जो छल्ली-छल्ली चित् धरम॥
निष्ठुरत्व-कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 16॥

ॐ ह्रीं निष्ठुरत्वभाव निष्ठुरत्वकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कहें पीठ के पीछे पर के दोष जो।
जिन-दर्शन के जिससे उड़ते होश हो॥
पर-पैशून्य कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 17॥

ॐ ह्रीं अवर्णवाद परपैशून्यकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

काय कुचेष्टा रागजनक जो हास्य मय।
ऐसी कथा करे आतम को कष्ट मय॥
कन्दर्प कौत्कुच्य कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 18॥

ॐ ह्रीं हास्य कायकुचेष्टाकन्दर्प कौत्कुच्यकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनसे होते विरह-कलह अवसाद भी।
वही कथाएँ हरती आतम स्वाद भी॥
तुम सम डंबर कथा त्याग को द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 19॥

ॐ ह्रीं विरहकलह अवसादडंबरकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बिना प्रयोजन जो जन बक-बक बोलते।
इसी कथा से अपनी लघुता खोलते॥
अब मौखर्य कथा को तजने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 20॥

ॐ ह्रीं लघुता मौखर्यकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अपने मुख से अपने गुण-गण की कथा।
नीच गोत्र दे करती अपनी दुर्दशा॥
आत्म प्रशंसा कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 21॥

ॐ ह्रीं नीचगोत्र आत्मप्रशंसाकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पर-दोषों को कहने करना सैर भी।
नीच गोत्र दे कलह कराये वैर भी॥
पर-परिवादन कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 22॥

ॐ ह्रीं अवगुण परपरिवादनकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

घृणा अन्य से करवाती जिसकी कथा।
समकित हरती भरती आतम में व्यथा॥
पर-जुगुप्सा-कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 23॥

ॐ ह्रीं घृणा परजुगुप्साकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिन वचनों से पर को पीड़ा कष्ट हो।
यही कथा चेतन को करती भ्रष्ट हो॥
पर-पीड़ा की कथा त्यागने द्वार दो।
अजितनाथ को वन्दन बारम्बार हो॥ 24॥

ॐ ह्रीं भ्रष्टता परपीड़ाकथाविनाशनसमर्थ श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य (घत्ता)

पापों की खानी, व्यसन कहानी,दोष कथा की, मनमानी।
जिनवर की वाणी-जग कल्याणी, सुनी कथा ना, वरदानी॥
तब ही दुख पाये, प्रभु नहिं भाये, कैसे हों आतमज्ञानी।
अब अजित ईश को, टेक शीश को, प्राप्त करें मुक्तिरानी॥
जित शत्रु के अजित की, जय जय बारम्बार।
अर्घ समर्पित हम करें, पायें स्वरूप सार॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमो नमः॥

समुच्चय जयमाला

(सोरठा)

अजितनाथ भगवान्, तुम चैतन्य विलास हो।
करें आज गुणगान, हमको भी संन्यास दो॥

(शेरचाल)

जय-जय श्री सर्वज्ञ देव अजितनाथ जी।
जय राग-द्वेष जीत बने वीतराग जी॥
जय-जय हितोपदेशी दिये दिव्य देशना।
हे! घातिया के घाति सुनो भक्त-प्रार्थना॥ 1॥

तुम मात-पिता बंधुवर्ग राज्य छोड़ के।
सब रिश्ते-नाते तोड़ चले मुख को मोड़ के॥
निर्ग्रंथ पंथ धार-धार तुम तो दौड़ते।
हम रिश्ते नाते जोड़-जोड़ माथा फोड़ते॥ 2॥

वे लोग रोज हमें देते ज्ञान स्वार्थ का।
सो हमने दिया गला घोंट परम-अर्थ का॥
परिणाम आज सामने है पाप कर्म के।
है दुनियाँ खूब दुखी दिखे लाज शर्म से॥ 3॥
ये कर्म ही तो देते हमें नर्क सी व्यथा।
संपूर्ण कौन कहे पीड़ा दर्द की कथा॥
अब व्यथा कथा नाशने उदास बनें हम।
ले भक्ति का सहारा प्रभु-दास बनें हम॥ 4॥

कभी नर्क से निकल के पशु योनि को छुये।
जहाँ छेद-भेद भूख-प्यास से दुखी हुये॥
तिर्यंच जन्म में स्वरूप का नहीं हो भान।
अब तीर्थ धाम बनने करें आप को प्रणाम॥ 5॥

पर्याय देव की मिली तो भोग-भोग भोग।
हम भूल गये आत्मा परमात्मा के योग॥
प्रभु! आपकी कृपा से बने अर्चना के भाव।
अब ध्यान दीजिएगा भक्त का मिटे विभाव॥ 6॥

जिस जन्म को तरसते स्वर्ग लोक के भी बोल।
वह जन्म हमको मिल गया है कोंड़ियों के मोल॥
ये मिट्टी वाला तन तथा ये मस्ती वाला मन।
है नाशवान् जल के बुलबुले सा नर-जीवन॥ 7॥

इस जन्म का उद्देश्य है, हो भक्ति आपकी।
पर लक्ष्य भ्रष्ट रच रहे हैं कथा पाप की॥
जिन तीर्थ क्षेत्र धाम नाम आपका ही भूल।
ये माटी वाला तन बना है माटियों की धूल॥ 8॥

हे अजितनाथ! विश्व में है आपकी कमी।
ये दास भी है दुखी भरी आँख में नमी॥
अब अर्चना रचायी गीत गाए आपके।
बस विश्व से हो दूर कर्म मोह पाप के॥ 9॥

नर देह मिट्टी में मिलेगी इसके पहले नाथ।
आशीष मिले आपका हो शीश पै भी हाथ॥
बस भावना हमारी जीतें मोह कर्म पाप।
हम भी विराजेंगे वहाँ जहाँ विराजे आप॥ 10॥

हमको स्वरूप लाभ होए तत्त्व का भी ज्ञान।
सो अजितनाथ आपकी रचायी भक्ति गान॥
विश्वास हमको है यही हो प्रार्थना मंजूर।
फिर वस्तु वो है कौन सी 'सुव्रत' से जो हो दूर॥ 11॥

(दोहा)

जिन-दर्शन से प्राप्त हो, निज-दर्शन का ज्ञान।
अतः द्रव्य ले भाव मय, जजें अजित भगवान्॥
स्वारथ का संसार है, स्वार्थ रहित जिनधाम।
परमारथ की प्राप्ति को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

अजितनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अजितनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री अजितनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

अजितनाथ प्रभु मूल में, चौबीसों भगवान।
पूर्ण 'चन्देरी' में हुआ, अजितनाथ-विधान॥
दो हजार तेरह मई, शुक्र तीन तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ करो...)

प्रभु अजित जिनेश्वर, हे! सर्वेश्वर, आप हमें भी तारें।
हम आरति आज उतारें।

प्रभु वित्त राग भव के त्यागी[2], तुम साँचे पूज्य वीतरागी[2]
हो तारणतरण जहाज शांति की धारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥ 1 ॥

विजया जितशत्रु के नंदा[2], जग-ज्येष्ठ जिनंदा आनंदा[2]
जिन सूरज-चंदा सम हमको उजयारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥ 2 ॥

सब पूज आपको सिर नायें[2], बहु भक्ति-सहित झूमें गायें॥[2]
क्यों भक्त रहें फिर पीछे खड़े पुकारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥ 3 ॥

पर-मन्त्र-तन्त्र ग्रह विष-बाधा[2], भय भूत डाकिनी जल बाधा[2]
प्रभु अजित-भक्त तो इनको सहज निवारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥ 4 ॥

तुम सबका ही कल्याण करो[2], सबको इच्छित वरदान करो[2]
अब 'सुव्रत' पाने 'विद्या' चरण निहारें, हम आरति आज उतारें॥
प्रभु अजित जिनेश्वर.... ॥ 5 ॥